अन्नकी कमी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ११

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद ९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १२ मओी, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

श्री शिवानन्दजीकी हत्या

गत शनिवार (ता० २२ अप्रैल '५१)को आधी रातके समय कुछ अज्ञात हत्यारे सौराष्ट्रके प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री शिवानन्दजीके आश्रममें आये और बिलकुल नजदीकसे अुन पर गोलियां चला गये। श्री शिवानन्दजीको सांघातिक चोट आयी, तथा कुछ ही घंटोमें सौराष्ट्रके अिस वीर कार्यकर्ताका अुज्ज्वल जीवन अिस तरह समाप्त हो गया।

श्री शिवानन्दजी और अुनके जेठे सहयोगी स्वर्गीय श्री फूलचंद कस्तूरचंद शाह सन् १९२० के आसपासके सालोंमें कुछ अरसे तक गांधीजीके साबरमती आश्रमके निवासी थे। असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ, अुसके कुछ पहले गांधीजीकी सहमति और आशीर्वाद लेकर वे अपने प्रांतकी सेवा करनेकी अिच्छासे, अपनी जन्मभूमि वढ़वाणमें जाकर रहने लगे, और वहां अुन्होंने अेक संस्थाकी स्थापना भी की। तबसे लगातार वे स्वराज आन्दोलनके सिलसिलेमें राजनीतिक, सामाजिक या शैक्षणिक जो-जो काम हुअे, सबमें भाग लेते रहे। अिस काममें अुन्हें अेक और मूल्यवान साथी मिल गये थे, स्वर्गीय श्री चमनलाल वैष्णव, जो अत्यन्त साधु-चरित्र और आध्यात्मिक पुरुष थे। तीनोंने मिलकर राजाशाही, और अस्पृश्यता, बाल-विवाह, अशिक्षा, आदि कुरीतियोंसे सौराष्ट्रका अुद्धार करनेमें अपनी सारी शक्ति लगा दी। पैसेका अुन्हें अभाव रहा और कअी बार अुदर-निर्वाहकी भी मुश्किल रही। अैसा खयाल किया जाता है कि अिसीके परिणाम रूप तीनमें से दो अर्थात श्री चमनलाल और श्री फूलचंद क्षयरोगके शिकार हो गये और असमयमें ही चल बसे। स्वराजके लिअे अुन्होंने हमेशा पहली पंक्तिमें रहकर काम किया। लेकिन स्वराजके अुदयका दिन वे नहीं देख सके। श्री शिवानन्दजी अिस आदरणीय त्रिमूर्तिके शेष सदस्य थे। आजादी मिलनेके बादसे वे सरकार और जनताके बीचकी कड़ी बन गये थे। पदका मोह अुन्हें छू तक नहीं गया था, अिसलिअे सरकार और जनता दोनों ही अुनकी खूब कद्र करती थीं। और प्रतिगामी शक्तियां, जो अस्पृश्यों और गरीबोंको दबाते और सताते रहना चाहती हैं, अुनसे अुतनी ही डरती थीं। अैसा लगता है कि वे किसानोंके प्रबल सहायक थे, अिसलिअे गिरासदार अुनसे नाराज हो गये और अुनके ही हाथों या अिशारे पर अुनकी हत्या हुअी है।

अुन्होंने अेक सिपाहीकी वीरगति पायी। अैसी मृत्यु पर शोक कैसा ? लेकिन सौराष्ट्रकी जनता और अुनके अनेक आत्मीय मित्रोंको अवश्य अुनके अुठ जानेसे बड़ी हानि हुअी है। अिस विस्तृत बन्धु-समुदायमें से श्री फूलचंद शाहकी विधवा पत्नी श्री शारदाबहन शाहका नाम विशेष अुल्लेखनीय है जिनके कुशल-क्षेमकी चिन्ता श्री शिवानन्दजी अपने सहयोगीकी मृत्युके बाद मित्रकी पूरी निष्ठाके साथ, हमेशा करते रहे। लेकिन श्री शारदाबहन खुद अेक वीर कार्यकर्त्री हैं और पुरी आशा है कि वे अिस, कामको, जिसमें अुनका अपना हिस्सा भी था, अपनी सदाकी लगनसे आगे बढ़ाती रहेंगी।

वर्धा, १–५–'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

बिना टिकटका प्रवास

रेल विभागके जानकार अेक भाओी लिखते हैं :

"बिना टिकट प्रवास करनेवालोंको पकड़नेके लिअे कभी-कभी मजिस्ट्रेट धावा (रेड) करते हैं। अिससे काफी पैसा वसूल तो होता है, मगर अिन धावोंका असर अुन लोगों पर जो लाअिन और ट्रेनके साथ रहनेवाले कर्मचारियों (line and running staff)के दोस्त हैं, कभी भी नहीं पड़ा। क्योंकि अुन लोगोंको गाड़ीमें चढ़ते या सफर करते समय पता चल जाता है कि अब और कहां पर धावा होनेवाला है। अिसलिअे मेरा निवेदन है कि मजिस्ट्रेटके साथ लाअिन और रनिंग कर्मचारी नहीं रहने चाहियें, या बहुत ही कम रहने चाहियें। सत्य ही यह धावा बगैर पूर्व सूचना दिये करना चाहिये। तब कितने ही कर्मचारीगण स्वयं बिना टिकटके और अूपरके क्लासोंमें सफर करते और मौज अुड़ाते हुअे मालूम होंगे।"

अैसी-अैसी अनेक युक्तियां आजमायी जा सकती हैं, और भले ही आजमायी जायं परंतु अिससे रोग बंद न होगा। चोरको पकड़नेकी जितनी तदबीरें सोची जा सकती हैं, अुतनी ही या अुससे अधिक तदबीरें चोर न पकड़े जानेकी खोज सकता है। सच्चा अुपाय तो जनतामें समाज-धर्मकी भावना जाग्रत करना ही है। चोरको पकड़नेके रास्ते वे अवश्य ढूंढें, और ढूंढते रहेंगे, जिन पर शासनकी जिम्मेदारी है। सर्वोदयके सेवकको तो कर्मचारी और जनता दोनोंमें शुद्ध व्यवहारकी भावना जाग्रत करनेका ही प्रयत्न करना चाहिये। कड़ी सजाओं और कुशल युक्तियोंके बिना जीवन शुद्ध नहीं रखा जा सकता, यह अश्रद्धा हममें न होनी चाहिये। मनुष्य गंदगीमें रहनेके लिअे नहीं बना है, और यह मुमकिन नहीं कि वह गंदगी पसंद करता रहे, या मारठोककर ही अुसमें से अुसे बाहर निकालना पड़े। जितनी मेहनत हम चोरोंकी युक्तियां जानने और अुसके अुपाय खोजनेके लिअे करते हैं अुतनी मेहनत यदि हम अपने व्यवहार और दूसरोंकी भावनाको शुद्ध करनेके लिअे करें, तो समाज जल्दी अूंचा अुठेगा। जिस समाजने गांधी जैसोंको जन्म दिया, वह बिलकुल गिरा हुआ नहीं हो सकता। अिसलिअे हम श्रद्धासे काम करें।

वर्धा, ५–५–'५१ कि० घ० मशरूवाला

www.vinoba.in

शक्तिमान शब्द

[ता० २२-३-'५१ को निर्मल, जिला आदिलाबादकी प्रार्थना-सभामें दिया हुआ विनोबाजीका भाषण। – द० दा०]

स्वराज्य शब्दकी महिमा

हम सर्वोदयके यात्री अपनी पैदल मुसाफिरीमें आपके गांवमें आ पहुंचे हैं। सर्वोदय अेक महान शब्द है और अुसका अर्थ भी महान है। समाजके सामने जब कोअी महान शब्द होता है, तो अुससे समाजको शक्ति मिलती है। शब्दकी महिमा अगाध होती है। जिस समाजके सामने कोअी बड़ा शब्द नहीं होता, वह समाज शक्तिहीन और श्रद्धाहीन बनता है। शब्दकी शक्तिका यह अनुभव हर जमातको और हर देशको हुआ है। हमारे देशमें चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और अुसका पराक्रम तथा महिमा सबने देख ली। १९०७ सालमें स्वराज्य शब्द दादाभाअी नौरोजीने हमें दिया और १९४७ में अुसका दर्शन हमें मिला। अुसका चमत्कार आखिर तो हैदराबादवालोंने भी देख लिया। हैदराबादवाले बहुत दिनोंसे सोच रहे थे कि बाकीके सारे देशमें स्वराज्यका अुदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा। अुनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभरमें पैदा हुअी थी, अुसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान अुससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्यके बादका शब्द

अिस तरह स्वराज्य शब्दका कार्य हिन्दुस्तानमें हो गया और अुसके साथ-साथ महात्मा गांधीजीका अस्त हुआ। अुनके जानेके पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तक तो सूझता ही नहीं था कि अिस देशका क्या होनेवाला है। लेकिन परमेश्वरकी कृपासे सब लोग स्थिर हो गये और अब अैसा समय आ गया है कि देशकी प्रगतिका अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है, अुसकी दिशा तय हुअी हो। तो गांधीजीके जानेके बाद चंद लोग अिकट्ठा हुअे और अुन्होंने अपने देशको सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजीका ही रचा हुआ था। और अुसकी जड़ हिन्दुस्तानकी संस्कृतिमें प्राचीन कालसे जमी हुअी है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था, तब तो वही अेक शब्द हमारे सामने था और परदेशियोंका यहांका राज्य हटानेमें ही हम सब लगे हुअे थे। हमारे खेतमें तरह-तरहके निकम्मे झाड़ अुगे हुअे थे। अुनको काटनेका जो काम हुआ अुसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्यप्राप्तिके बाद अुस खेतमें परिश्रम करना है और बीज बोना है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि लोगोंका यही खयाल है कि अब तो फसल काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेतीमें परिश्रम करके फसल लाना है, अुसीका नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न आता, तो हम सारे ध्येयशून्य बन जाते।

स्वराज्यके बादका नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्दने हमारे सामने स्पष्ट अुद्देश्य रख दिया। वह अुद्देश्य अैसा है जिसमें सब लोगोंका समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्रायमें स्वराज्यप्राप्तिके बाद हिन्दुस्तानमें जो तरह-तरहके राजकीय पक्ष पैदा हुअे हैं, अुनकी कोअी जरूरत नहीं थी। स्वराज्यके बाद हिन्दुस्तानमें जो असंख्य समस्यायें पैदा हुअीं, अुनमें से अनेक नैतिक थीं। यानी जनताकी नीति गिरी हुअी थी, अुसका हमें तरह-तरहसे अनुभव आया। और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहां नीतिहीनता और शीलभ्रष्टताका दर्शन होता है। अिसके लिअे मैं जनताको दोष नहीं देता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारीकी सारी जनता नीतिभ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीतिभ्रष्टताका दर्शन अगर सर्वत्र होता है, तो यही समझना चाहिये कि अुसका कारण परिस्थितिमें मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थितिकी हो चाहे जनताकी हो, लेकिन जो है अुसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्यप्राप्तिके बाद सब लोगोंका शील कायम रखना, आपसमें प्रेमभाव कायम रखना आदि बिलकुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। अिस हालतमें किसी भी तरहके राजकीय अुद्देश्यके लिअे मौका ही नहीं रहता है। जब समाजका नैतिक स्तर और आपसका प्रेमभाव बढ़ेगा, तब राजकीय अुद्देश्योंके लिअे मौका आयेगा। अिसलिअे जिन-जिन लोगोंसे जब बात करनेका मौका मिलता है, तब अुन्हें मैं यही कहता हूं कि भाअियो, यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ और केवल अिन्सान बन जाओ।

आजका परदेशावलम्बी स्वराज्य किस कामका?

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। कभी मुझे छोटे-छोटे गांवोंमें जाना होता है तो कभी शहर देखनेको मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि अुधर गांवोंकी परिस्थिति क्या है और अिधर शहरोंकी परिस्थिति क्या है। देहातमें अेक तरहका दुःख है तो शहरोंमें दूसरी तरहका। देहातमें देखता हूं कि लोगोंको कपड़े पहननेके लिअे नहीं हैं और शहरमें देखता हूं कि लोग शराबी बन रहे हैं। वस्त्रोंका न होना अेक बड़ा भारी दुःख है, तो शराबी होना कोअी सुखकी बात नहीं है। तरह तरहके व्यसन शहरोंमें बढ़ रहे हैं। स्वराज्यके पहले स्वदेशी-विदेशीका जो फर्क हम करते थे, वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं, खरीद लेते हैं। स्वराज्यके बाद हमारे शहरोंकी अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओंसे भर जायं, तो वह स्वराज्य किस कामका? और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आपके स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा, क्योंकि जब तक अुनका माल यहां खपता है तब तक दूसरे देशोंको क्या फिक्र पड़ी है कि आपका देश कब्जेमें रखकर सारा जिम्मा अुठायें। और अिन दिनों किसी देशको अपने कब्जेमें रखना कठिन काम हो गया है। अिसलिअे दुनियाके बड़े-बड़े देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है, तो राजकीय सत्ता हासिल करनेमें कोअी लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्यका कोअी अर्थ ही नहीं रहेगा, अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओंसे भरे रहे। यह है हमारे शहरोंका हाल।

अुधर देहातका हाल यह है कि अुन लोगोंके पास कोअी धंधे नहीं हैं। अुनके जो छोटे-छोटे धंधे थे, वे शहरवालोंने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहां बैठे हैं वह अेक धान कूटनेकी मिल है। अगर धान कूटनेका धंधा देहातमें चला, तो लोगोंको काम मिलेगा और वह भी शहरमें गया, तो देहातवाले बेकार हो जायंगे।

तो अुधर परदेशी वस्तुओंसे शहरके बाजार भर रहे हैं। अुनके विरोधमें शहरियोंका पराक्रम कुछ नहीं चलता है। अुनका सारा पराक्रम देहातके धंधे डुबानेमें है।

देहातके धंधे रिझर्व रहें

होना यह चाहिये कि देहातके धंधोंको देहातमें रखना चाहिये और परदेशसे जो माल आ रहा है अुसके विरोधमें शहरोंमें धन्धे खड़े होने चाहियें। आजकी हालत यह है कि परदेशके लोग हमारे शहरोंको लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातको लूटते जा रहे हैं। अगर अिससे अुलटा बना यानी परदेशके धंधेके विरोधमें शहरवाले खड़े हो गये और देहातके धंधोंको अुन्होंने बचा लिया, तो देहात और शहर दोनोंका सहयोग होगा और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलोंको जैसे रिझर्व रखते हैं, वैसे देहातके लिअे कुछ धंधे रिझर्व रखने चाहियें। अिस तरह देहातके

www.vinoba.in

धंधोंको हमने सुरक्षित नहीं रखा, तो देहात अुजड़ जायंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे। तो फिर शहरोंकी क्या हालत होगी यह आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धिसे भी आपको देहातकी रक्षा करनी चाहिये।

देहात अुजड़ जाय तो शहर और देहातकी लड़ाअी अटल

तो हम लोगोंकी अक्ल अब अिस बातमें लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनोंका सहयोग कैसे हो और दोनों मिलकर परदेशी मालके विरोधमें कैसे शक्ति पैदा करें। यह नहीं हो रहा है। मुझे देहातवालोंको कहना पड़ता है कि भाअी तुम्हारे और शहरियोंके बीच लड़ाअी होनेवाली है। मैं अुस लड़ाअीको नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियोंका रवैया नहीं बदला, तो यह लड़ाअी अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

सर्वोदयका ध्येय

मैं अुस लड़ाअीको नहीं चाहता, अिसलिअे सर्वोदयके प्रचारके लिअे आपको समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि अिस वक्त अिस शब्दमें जो शक्ति है, अुसका आप चिंतन करेंगे तो वह आपको महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देशमें सब जगह शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देशमें अेक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर अिस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गोंके झगड़ोंकी बात निकालते हैं या कोअी खास लोगोंके हितकी ही बात सोचते हैं तो हिन्दुस्तान सुखमें नहीं रहेगा। सरकारी कानूनोंमें जो भी लूपहोल (छिद्र) मिलते हैं, अुनका लाभ अुठानेका व्यापारी सोचते हैं। अिस तरह व्यापारी और सरकार दोनोंके बीच अक्लकी लड़ाअी चलेगी और अिन दोनोंकी लड़ाअीके बीच देहातके लोग मारे जायेंगे। जरूरत अिस बातकी है कि व्यापारियोंकी ताकत देहातके हितमें लगे, सरकारकी ताकत देहातके हितमें लगे, और शहरियोंकी भी ताकत देहातके हितमें लगे। और देहाती लोग, शहरके लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओंका और विचारोंका जो आक्रमण हो रहा है, अुसके विरोधमें खड़े हो जायं।

तो स्वराज्यके बाद सर्वोदयका क्या काम है, यह मैंने थोड़ेमें आपको समझाया। हमारे देशमें चार शक्तियां काम कर रही हैं। अेक है सरकारकी, दूसरी है व्यापारियोंकी, तीसरी है शहरियोंकी और चौथी है देहातियोंकी। अिन सब शक्तियोंका योग साधना सर्वोदयका काम है। अब आप ही सोचिये कि जब सर्वोदयमें अितना अर्थ भरा है तो अिसको छोड़कर और किस शब्दकी आपको जरूरत है? और किन राजकीय पक्षोंकी आपको आवश्यकता है? सर्वोदय कोअी राजकीय पक्ष नहीं है। लेकिन सारे राजकीय पक्षोंको पेटमें निगलनेके लिअे वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषामें सबका हृदय अेक बनाना, सबकी भावना अेक बनाना, और सबकी शक्तियोंका समवाय सिद्ध करना सर्वोदयका लक्ष्य है।

भाअियो, मैं आशा करता हूं कि यहांका हरेक जवान और प्रौढ़ अिस शब्दसे स्फूर्ति पायेगा और अिसके लिअे जीवनभर कोशिश करेगा। अिस शब्दसे जो स्फूर्ति मिलती है, वह रामनाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदयमें रम रहा है। अुसीका भजन अब हम सब मिलकर करेंगे।

हमारा नया प्रकाशन

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

श्री सोमनाथ मंदिर — स्पष्टीकरण

[सौराष्ट्रके मुख्य मंत्री श्री अुछरंगराय ढेबरने श्री किशोरलालभाअीके पत्रका जवाब देते हुअे अिस विषय पर किये गये प्रश्नोंका जो स्पष्टीकरण किया है अुसे 'हरिजनसेवक' के पाठकोंके लिअे यहां दिया जा रहा है।]

आपका पत्र मिला। आपके पत्रमें अुठाये गये हरअेक प्रश्नका खुलासा कर रहा हूं। आप अिसे मेरी जवाबदारी पर प्रकाशित कर सकते हैं।

प्रश्न – हरिजनोंके विषयमें।

अुत्तर – श्री सोमनाथ महादेवकी संस्थामें मैं ट्रस्टी नहीं हूं। लेकिन ट्रस्टी मित्रोंके साथ मेरा गहरा सम्बन्ध है, अिसलिअे मैं भी अुतना ही जवाबदार हूं। अुन मित्रोंकी भावना मैं जानता हूं। श्री सोमनाथ महादेवके मंदिरमें हरिजनोंको दर्शन-पूजनका अुतना ही अधिकार है, जितना दूसरे हिन्दुओंको। यह आग्रह वे लोग भी रखते हैं, यह बात मैं अपनी प्रत्यक्ष जानकारीसे जानता हूं। ट्रस्ट-डीडमें हरिजनोंके अिस अधिकारका अुल्लेख हुआ है, और प्रत्यक्ष व्यवहारमें भी अुसका स्वीकार हुआ है।

प्रश्न – सौराष्ट्र सरकार और सोमनाथ।

अुत्तर – सौराष्ट्र सरकारने सोमनाथ मंदिरके खर्चके लिअे पांच लाख रुपये दिये हैं, यह बात सच नहीं है। सोमनाथ महोत्सव प्रसंगमें यात्रियोंके लिअे पानी, रास्तेकी मरम्मत, दीया-बत्ती आदि व्यवस्थाका काम सरकारने अपने अूपर लिया है। मेहमानोंके स्वागत-सत्कारकी और मंदिरके खर्चकी तमाम जवाबदारी सोमनाथ-ट्रस्टकी ही है। सोमनाथ मंदिर और सोमनाथ-ट्रस्ट अिन दो शब्दोंका प्रयोग पर्यायवाची शब्दोंकी तरह हो रहा है। सोमनाथ-ट्रस्टकी मंदिरके सिवा और भी कअी प्रवृत्तियां रहेंगी। अिन प्रवृत्तियोंमें सरकार सहायता कर सकती है। सोमनाथ-ट्रस्टको सरकारने प्रभास-पाटणमें और प्रभास-पाटणके बाहर भी जमीन दी है। अिस जमीनमें से कुछ पड़ती है, कुछ खेतीके लायक है पर अभी यों ही पड़ी है। और सौ सवासौ अेकड़ खेतीकी जमीन भी है। अिसमें से कुछ महसूल पर, और कुछ माफी पर दी गयी है। कुल जमीन ८०० से १००० अेकड़ तक होगी। अिसमें से जितनी जमीन पर मकान आदि थे, अुसका मुआवजा सोमनाथ-ट्रस्टने दिया है। वह सरकारके पैसेमें से नहीं दिया गया है। खेतीवाली जमीनकी आमदनीका — पन्द्रह वर्षका — औसत आंकड़ा मिलने पर मैं बताअूंगा। बाकी जमीनकी आमदनी तो नहीं जैसी थी। तब भी अुसका आंकड़ा भी मैं प्रकाशित करूंगा।

यह जमीन ट्रस्टके लिअे अुपयोगी होगी, अिसी दृष्टिसे अुसे दी गयी है। अिस तरह जमीन देकर यदि मैंने धर्म-निरपेक्ष राज्य (Secular State) के आदर्शका कोअी अुल्लंघन किया हो, तो अुसकी जवाबदारी मेरी है।

प्रश्न – केन्द्रीय सरकार और प्रादेशिक सरकारमें अिस विषय पर कानूनका कोअी फर्क है क्या?

अुत्तर – नहीं। मैं खुद तो अैसा मानता हूं कि यदि केन्द्रीय सरकार धार्मिक स्थानोंको धार्मिक भेदभाव किये बिना मदद करती है, तो यह धर्म-निरपेक्ष राज्यकी व्याख्याके खिलाफ नहीं है। करोड़ों लोग आज स्वेच्छापूर्वक समाजका नीति-नियमन स्वीकार करते हैं, अिसमें धर्मस्थानोंका प्रभाव भी अेक बड़ा कारण है। धर्म-स्थानोंके अिस प्रभावको कम करनेके बदले अुसे विशुद्ध बनानेकी कोशिश ज्यादा योग्य है। और अैसा तभी हो सकता है, जब केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारें अुनमें अभीष्ट सुधार करनेके काममें सहायता और प्रोत्साहन दें। लेकिन यह मेरा व्यक्तिगत विचार है। यह तो मैं मानता ही हूं कि सौराष्ट्र सरकार तथा दूसरी प्रादेशिक सरकारें पूरी वफादारीके साथ केन्द्रीय सरकारकी धर्म-निरपेक्ष राज्यकी व्याख्या माननेके लिअे बाध्य हैं।

राजकोट, ३०-४-'५१
(गुजरातीसे)

अु० न० ढेबर
मुख्य मंत्री, सौराष्ट्र सरकार

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१२ मअी १९५१

अन्नकी कमी

पण्डित जवाहरलाल नेहरूने राष्ट्रसे अपील करते हुअे कहा है कि वह अन्नके अुत्पादनमें अपनी सारी शक्ति लगा दे। अुनकी अिस अपीलका हमें हृदयसे स्वागत करना चाहिये। नियंत्रण और माप-बन्दीके बारेमें अपनाअी हुअी सरकारी नीति और अमल पर जो भी मतभेद हो, अन्नका अुत्पादन बढ़ानेकी आवश्यकता पर तो दो रायें हो ही नहीं सकतीं। अिस प्रसंगमें अन्नका अर्थ गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, तुअर आदि खाद्यान्न ही करना चाहिये।

कुछ लोग जोर देकर यह बात कहते हैं कि आजकी हालतमें भी हम अन्नमें स्वावलम्बी हैं। जो कमी दिखती है अुसका कारण नियंत्रण, कालाबाजार, मुनाफाखोरी आदि हैं। यह दलील भी की जाती है कि कमी हमारी आवश्यकताके १० प्रतिशतसे अधिक नहीं है, और अितनी छोटी कमी दुश्चिन्ताका कारण नहीं होनी चाहिये।

मुझे भय है कि यह विवाद हमारी जनताको गुमराह करता है और हकीकतसे आंख मूंद लेनेमें हमारी मदद करता है।

अन्नमें मुनाफाखोरी और कालाबाजार चल रहे हैं, और समय-समय पर दुर्भिक्षकी परिस्थिति भी पैदा होती रहती है, यह बात खुद गवाही देती है कि अन्न हमारे पास काफी नहीं है। परमेश्वरकी कृपा है कि अन्नका बहुत लम्बे समय तक सुरक्षित हालतमें रहना सम्भव नहीं। यदि हमारे पास पर्याप्त अन्न होता, आजकी परिस्थितिमें जब कि नियंत्रण चल रहा है और मापबन्दीके अनुसार अेक व्यक्तिको अुसकी आवश्यकतासे बहुत कम अनाज दिया जा रहा है, किसानों और व्यापारियोंके पास छिपे हुअे अन्नका संग्रह अभी तक अितना बढ़ गया होता कि वे अुसे मुनाफेके साथ न रख सकते, और न अुसकी कीमत ही मनमानी बढ़ा सकते। कालाबाजार अिसलिअे चलता है कि वह ग्राहकोंकी संख्या कम कर देता है, जिससे कि माल जल्दी और आसानीसे चुक नहीं जाता। लेकिन अुसमें भी यह खयाल तो रहता ही है कि माल अितना ज्यादा न अिकट्ठा हो जाय कि अुसमें बहुत ज्यादा पूंजी फंस जाय या वह खुद रखे-रखे खराब हो जाय और नष्ट हो जाय। अगर कोअी देवदूत हर गरजमन्द आदमीको अितना पैसा दे दे जितना कि अुसे चोरबाजारसे अपनी जरूरतका माल खरीदनेके लिअे चाहिये और दूसरी ओर अगर सरकार भी चोरबाजारके व्यापारियोंको आम माफीकी घोषणा कर दे, तो शीघ्र ही पता चल जायगा कि माल ग्राहकोंकी मांग पूरी करनेके लिअे काफी नहीं है। जब वे लोग अैसा कहते हैं कि चोरबाजारसे हम जितना अनाज चाहें, खरीद सकते हैं, तब वे यह भूल जाते हैं कि यह हालत तभी तक है जब तक कि चोरबाजारके ग्राहकोंकी संख्या कम है। अिसलिअे यह तो सिद्ध है कि अनाज काफी मात्रामें नहीं है। यह परिस्थिति काल्पनिक नहीं वास्तविक है। और अुस पर अन्नका अुत्पादन बढ़ाकर ही विजय पायी जा सकती है।

सवाल अिस बातका नहीं है कि कमी १० प्रतिशत है, या ५ प्रतिशत है या १५ प्रतिशत है। हम स्वावलम्बी नहीं हैं, यह बात किसी भी दीर्घदृष्टि व्यवस्थापकको सावधान करनेके लिअे पर्याप्त मानी जानी चाहिये, फिर चाहे अुस पर किसी सामान्य कुटुम्बकी या पूरे गांवकी, या अखिल देशकी व्यवस्थाकी जिम्मेदारी हो। अनाजके अुत्पादनके जो आंकड़े दिये गये हैं, अुनके सही होनेका यदि हमें निश्चय हो तो भी हमारा अुद्देश्य गणितके हिसाबसे 'बावन तोला पाव रत्ती' वाला स्वावलम्बन करनेसे सिद्ध नहीं होगा; हमें तो अन्नमें भरपूर और हिसाबसे बहुत ज्यादा स्वयंपूर्णता प्राप्त करनी चाहिये। मेरा अपना विचार तो यह है कि हमारा अन्न-अुत्पादन हमारी गणित-सिद्ध जरूरतसे ड्योढ़ा होना चाहिये। हमारे यहां अन्न तो अितना भरपूर होना चाहिये कि पानीके बाद दूसरी सस्ती चीज़ वही हो। जब तक अैसा नहीं होता, तब तक देशकी अुन्नति हो ही नहीं सकती। मुझे तो अैसा संदेह होता है कि पिछले हजार वर्षोंमें हमारे देशने शायद काफी अनाज कभी पैदा ही नहीं किया हो। अगर किसी देशमें अनाज सचमुच भरपूर हो तो अुसकी समृद्धि होनी ही चाहिये। ठीक अिसी तरह अगर कहीं अनाजकी तंगी हो, तो वहां तरह-तरहके धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दोष खड़े होंगे, और सांस्कृतिक तथा नैतिक पतन धीरे-धीरे होगा।

अन्नका जरूरतसे ज्यादा अुत्पादन हमारा पहला कर्तव्य होना चाहिये, और अपनी दूसरी तमाम योजनाओंकी अपेक्षा हमें अिस कामको ही ज्यादा महत्त्व देना चाहिये। अैसे किसी भी साधनकी अुपेक्षा नहीं होनी चाहिये, जिससे अिस प्रयत्नमें कुछ भी मदद मिलती हो। लगानकी पद्धति, जमीनकी मालिकीकी व्यवस्था, मजदूरी और वेतनकी रीति, खेतीकी शोध, वन-विस्तार, पशु-पालन, स्थानीय स्वराज्य-संस्थाअें, सिंचाअी अित्यादि सबकी हमें अैसी पुनर्व्यवस्था करनी चाहिये कि अिनसे अतिशय अन्न अुत्पादनको सबसे बड़ा महत्त्व और प्रोत्साहन मिले। अन्तरराष्ट्रीय व्यापार, अुद्योगीकरण, अैसे यंत्रों या दूसरे साधनोंका आयात, जो अनाजके अुत्पादनके कामके नहीं हैं — यह सब हम अभी स्थगित रख सकते हैं। अिसमें अेक पीढ़ीकी देर हो जाय, तो भी कोअी हर्ज नहीं है। अगर हम अन्न अुत्पादन बढ़ानेमें अपनी योग्यता सिद्ध कर सकें, तो हमें मानो अपनी सर्वांगीण अुन्नतिकी कुंजी ही मिल गयी। जब तक हमारे पास जीवनकी सिद्धिके लिअे अनिवार्य यह पहली चीज ही नहीं है, तब तक जीवन-मान अूंचा अुठाने और लोग-हितकारी राज्यकी स्थापना करनेकी हमारी शेखीका क्या अर्थ है?

वर्धा, २-५-'५१ कि० घ० मशरूवाला
(अंग्रेजीसे)

गैरमजहबी राज्यमें मंदिरका स्थान

राजकोटसे अेक भाअी लिखते हैं:

"११ मअीको राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबू सौराष्ट्रके प्रभास-पाटण नामक स्थानमें सोमनाथके मंदिरका जीर्णोद्धार करके शिवलिंगकी पुनः प्रतिष्ठा करनेकी विधिमें भाग लेने आनेवाले हैं।

"अिस युगमें अैसा काम किसी तरह समझमें नहीं आता। हमारा राज्य 'गैरमजहबी' है। वह अैसे काममें कैसे शरीक हो सकता है? दूसरे, भारतमें महात्मा गांधीके जो थोड़ेसे श्रेष्ठ अनुयायी हैं, अुनमें से अेक श्री राजेन्द्रबाबू हैं। वे अपनेको अिस कामके साथ कैसे जोड़ते हैं, यह भी समझमें नहीं आता। तीसरे, आज जब देश भयंकर आर्थिक और अन्न-संकटमें से गुजर रहा है, तब लाखों रुपयों और सैकड़ों मन अनाजका खर्च किस तरह अुचित माना जा सकता है? हम साधारण लोगोंको समझा रहे हैं कि लग्न वगैराके मौकों पर कमसे कम खर्च करना चाहिये और सहभोज तो करना ही नहीं चाहिये। भला अैसे अुपदेशका असर क्या हो सकता है? आज जब कुछ प्रांतोंमें भुखमरीका भय मुंह बाये खड़ा है, तब अैसे जलसे क्या हमें शोभा देते हैं? फिर पाकिस्तान पर, यूनो पर और सारे जगत पर अिसका क्या असर

www.vinoba.in

होगा? हम किसी भी तरह यह अुचित काम नहीं करते, अैसा मेरा निश्चित मत है। यदि आपको अिस काममें कोअी तथ्य मालूम होता हो, तो हमारे जैसे लोगोंको समझाअिये।

"यह कदम कितने ही बड़े आदमियोंको भी गलत मालूम होता है, कितने ही अखबारवालोंको भी अनुचित लगता है, लेकिन नैतिक साहस न होनेसे वे सच बात नहीं कह सकते और छिपी टीका करते रहते हैं। आपको अगर यह गलत लगता होगा, तो आपके पत्रमें अिसका खुला विरोध करनेकी शक्ति है, अैसा मानकर ही मैंने यह लिखा है। अिस सम्बन्धमें आज तक कुछ क्यों न लिखा गया, यही मैं सोचा करता था। लेकिन बादमें यह खयाल आया कि अिस सम्बन्धमें ब्यौरेवार जानकारी न होनेसे शायद कुछ न लिखा गया हो।

"अब यदि यह काम आपको गलत मालूम होता हो तो वैसा लिखें, और यदि आप अिसे अुचित मानते हों, तो किस तरह यह समझावें।"

अिस मंदिरका जीर्णोद्धार राज्यकी ओरसे नहीं होता और अुसमें कण्ट्रोलके अन्नका अुपयोग नहीं होगा, अैसा श्री कन्हैयालाल मुंशीका स्पष्टीकरण पिछले अंकमें पाठकोंने पढ़ा होगा।

'गैरमजहबी' राज्यका अर्थ करनेमें हम बड़ी गड़बड़ करते हैं। अिसका सही अर्थ समझनेमें भी श्री मुंशीका पत्र मदद करेगा।

यह माननेका कोअी कारण नहीं कि श्री राजेन्द्रबाबू राष्ट्रपतिके नाते अिस मंदिरकी पुनः प्रतिष्ठामें भाग ले रहे हैं। वे खुद सनातनी मूर्तिपूजक हिन्दू हैं। और अुस रूपमें अुन्हें अिस कार्यमें भाग लेनेसे कौन रोक सकता है? गांधीजीके अनुयायीके नाते भी अुनके अिसमें शरीक होनेमें क्या हर्ज है, यह मेरी समझमें नहीं आता।

अिस युगमें अैसे मंदिरोंकी स्थापना, जीर्णोद्धार वगैराका काम ही छोड़ देने लायक है, यह पूजाधर्म अब मानने जैसा नहीं रहा—यह अेक सुधारवादी विचार है। यह विचार जैसे-जैसे फैलेगा, वैसे-वैसे अिस तरहके देव-स्थान फिर जीर्ण स्थान बनेंगे। लेकिन आज तो धर्मको माननेवाले करोड़ों लोग मौजूद हैं। अुनकी दृष्टिसे हमें अिस प्रश्नको देखना चाहिये। सुधारकोंको अपने विचार फैलाने चाहियें और धीरज रखना चाहिये।

सोमनाथ मंदिरके पीछे राजनैतिक क्लेशका अितिहास जरूर है। लेकिन अिससे यह तो हरगिज नहीं कहा जा सकता कि हिन्दुओंको सोमनाथका जीर्णोद्धार करनेका हक ही नहीं है। अिसलिअे अिस प्रश्नके साथ राजनीतिको ज़ोड़ना ठीक नहीं है। पाकिस्तान या यूनोको भी अैसा नहीं करना चाहिये। लेकिन अगर वे अिस प्रश्नके साथ राजनीतिको जोड़ें भी, तो अुससे डरकर भारत सरकार अपनी प्रजाको खुदके हकोंका अुपयोग करनेसे कैसे रोक सकती है? मुझे नहीं लगता कि सोमनाथके जीर्णोद्धारसे किसी दूसरी जाति या देशके हक छीने जाते हैं। लाखों रुपयेका खर्च अवश्य दुःखकी बात है। लेकिन यह दुःख तो तभी दूर हो सकता है, जब हमारी सरकार, हमारे नेता और श्रेष्ठ माने जानेवाले लोग गरीबोंकी दृष्टिसे विचारने लगें।

वर्धा, २८-४-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(गुजरातीसे)

हमारा नया प्रकाशन

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

अनुवादक: **सोमेश्वर पुरोहित**

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

मद्यनिषेध हर हालतमें आवश्यक

अिधर 'हरिजन'में शराबबंदीके लिअे जो जोर लगाया गया है, वह मुझे अच्छा लगा है और जरूरी भी प्रतीत होता है। अिसमें शक नहीं कि राष्ट्रीय सरकारसे गांधीजीके कार्यक्रमों पर मुस्तैदीसे अमल किये जानेकी जो आशा की गअी थी, अुसमें सिर्फ ढिलाअी ही नहीं की जा रही है, वरन् काफी टालटूलका रुख भी रहता है। अिसके कारण असंतोषका अेक विचित्र ही वायुमंडल बन गया है। अिसे दूर करने या मुख्य समस्याओंको हल करनेके लिअे कोअी कारगर कदम अुठाया ही जाना चाहिये, जिनमें मद्यनिषेध भी अेक मुख्य समस्या है।

प्रत्येक राज्यके जैसा ही बिहार राज्यकी सरकारका भी अिस विषयमें कुछ अैसा ही ढीलाढाला रुख रहा है और अिसके बारेमें सबकी करीब-करीब अेकसी ही कमजोर दलील होती है। अभी-अभी मार्चके दूसरे सप्ताहमें बिहार राज्यकी धारासभामें अिस संबंधमें जो चर्चा चली है और राज्यकी सरकारकी ओरसे जो विचार पेश किये गये हैं, वे सदमा पहुंचानेवाले हैं। और अुन पर विचार करना निहायत जरूरी है।

बिहार राज्यके आबकारी मंत्रीने १४ मार्च (१९५१)की धारासभाकी बैठकमें यह बताया है कि—"अैसी कोअी बात नहीं है कि सरकारको अिस बातका भय है कि मद्यनिषेध जारी करनेके बाद आमदनीका अेक बड़ा जरिया बंद हो जायगा। पर संदेह यह है कि योजना सफल नहीं होगी। अेक तो नियंत्रण (कंट्रोल)के कारण, जैसा कि कहा जाता है, भ्रष्टाचार फैला है और लोगोंका नैतिक पतन हो रहा है। और अब अुसके बाद मद्यनिषेध जारी करके वर्तमान परिस्थितिमें भ्रष्टाचारको प्रोत्साहन देना हमारा ध्येय नहीं है। हम नहीं चाहते कि समाजके नैतिक पतनका अेक कारण मद्यनिषेध भी बने। हमें पूर्ण विश्वास है कि अिसमें सर्व-साधारणका सहयोग नहीं मिलेगा। शराब पीनेवाले शराबके लिअे सभी प्रकारके कुत्सित प्रयत्न करेंगे ही। और सराकारी अफसर भी वैसी स्थितिमें अपनेको नहीं बचा सकेंगे।" *

आगे अुन्होंने तफसीलमें बताया कि मद्य-सेवनको कम करनेके लिअे राज्यकी सरकार किस तरह मद्यके मूल्यमें वृद्धि करती रही है तथा करवृद्धि करके और जगह-जगह अवैधानिक कार्रवाअीके लिअे सैकड़ों मुकदमे चलाकर लोगोंमें मद्य-सेवनकी बुराअीको कम करनेका प्रयत्न करती रही है। बिहार राज्यकी सरकार गये साल भी करीब-करीब अैसी ही दलील मद्यनिषेध जारी करनेके सम्बन्धमें देती रही है और प्रायः प्रत्येक प्रांतका भी करीब-करीब अैसा ही रवैया रहा है। क्या यह सही दलील और दुरुस्त रवैया है?

बिहारकी धारासभाकी अुस दिनकी चर्चामें अिसी संबन्धमें अेक और मार्केकी बात रही। सभाके सदस्योंकी बड़ी तादादने किसी भी हालतमें मद्यनिषेध दाखिल करने पर जोर दिया, पर अुसका कुछ नतीजा नहीं निकला। फिर अुन सदस्योंने पचवअी (यहांके पिछड़े हुअे वर्गों और आदिवासी जातियोंमें चावल और मकअी आदि सड़ाकर अेक प्रकारका पेय बनाकर अुसका अुपयोग करनेकी बुरी प्रथा है, जिससे अन्नकी और अुनकी तंदुरुस्तीकी बहुत बड़ी बरबादी होती है और जो बड़ी नशीली चीज है।) बनानेकी प्रथा पर रोक लगानेकी बात अुठायी, तो अुसका जवाब देते हुअे आबकारी मंत्रीने बताया: "यह अेक प्रश्न अवश्य है। लोगोंका कहना है कि अिससे खाद्यान्नकी बहुत अधिक बरबादी होती है। परन्तु जिन क्षेत्रोंमें पचवअीका अुपयोग किया जाता है अुन क्षेत्रोंका भ्रमण करके हमने यह अनुभव प्राप्त किया है कि वहांके लोगोंके

* 'राष्ट्रवाणी' पटना, १८ मार्च, १९५१

www.vinoba.in

लिअे यह आहारका अंग बन गया है। अतअेव अैसी परिस्थितिमें अिस पर अेकाअेक रोक लगाना अुचित नहीं जान पड़ता।"*

सन् १९३६–३७में कांग्रेसके हाथमें शासनकी बागडोर आने पर तुरन्त शराबबन्दीका काम हाथमें लिया गया था। अुस समय हमारे सामने ये सवाल अुठ ही नहीं सकते थे। हमारे विचार और मंजिल बिलकुल साफ नजर आते थे। लेकिन आज हम अिस तरह अंधकारमें टटोलते-से क्यों चलते हैं! अंग्रेज सरकारने भी कभी अैसी दलील नहीं अुठाअी थी। अुनकी मद्यकी आयके साथ शिक्षाका सवाल जुड़ा होनेकी अेकमात्र दलील थी, जो सर्वथा पंगु थी। क्या राष्ट्रीय सरकारसे भी वही अुम्मीद की जाय! कांग्रेसने मद्यनिषेधके लिअे अुचित प्रस्ताव रखा तथा गांधीजीने अिसके लिअे आन्दोलन चलाया, तब कभी भी अैसी दलील सामने नहीं आअी। गांधीजीको यह विश्वास था कि जो काम अभी हम कानूनकी रुकावटके कारण नहीं कर सकते हैं, वह देशकी सरकारके समयमें अिस अड़चनके दूर हो जाने पर अनुकूल अेवं अुपयोगी न्यायसंगत कानूनके जरिये आसानीसे कर सकेंगे। लेकिन आज अुनकी अिच्छाकी यही कीमत आंकी जाती है क्या? कभी-कभी अैसी शंका अुठ खड़ी होती है कि हमारी धारा अिस तरह बदल रही है।

भारतीय संविधानके मद्यनिषेधके आदेशके साथ ही बम्बअीकी सरकारने वहां के बड़े-बड़े शराबियों और शराबके व्यापारियोंकी गालियां बरदाश्त करके मद्यनिषेधका कानून जारी करनेका जो सराहनीय कदम अुठाया है, अुससे अन्य राज्यकी सरकारोंको कुछ करनेकी प्रेरणा मिल सकती है। बिहार राज्यकी सरकारके सामने मद्यनिषेध जारी करनेमें आर्थिक नुकसानीका सवाल नहीं है, जैसा कि अन्य कअी राज्योंके सामने है, तो यह अेक शुभ शकुन होते हुअे भी अुसके नियंत्रणसे भ्रष्टाचार फैलनेका जो अुनका खयाल है वह सर्वथा भ्रमपूर्ण समझा जा सकता है। मुझे तो अिस दलीलमें खुदकी अन्दरूनी खामियोंके सिवाय कोअी खास तथ्य नजर नहीं आता। जब कि अन्य चीजों पर नियंत्रणके बावजूद भ्रष्टाचारका जोर बढ़ता ही रहा है और गांधीजी जैसेके अुसका विरोध करने पर भी अुसे आज तक हम जारी रख ही रहे हैं, तब मद्यनिषेधके नियंत्रणसे भ्रष्टाचारकी कल्पना करके अिस बुराअीकी अवधिको और अधिक बढ़ाना और वैसी दलीलें पेश करके वातावरण बिगाड़ना कोअी अच्छी बात नहीं कही जा सकती। अिसलिअे कहा जा सकता है कि बगैर किसी दलीलके मद्यनिषेध हर हालतमें आवश्यक है। हमारी नम्र रायमें आज अिस कामको और अधिक टालना कतअी ठीक नहीं है। अेक बात और यहां रख देना कुछ अप्रासंगिक नहीं होगा कि बिहारके रचनात्मक कार्यकर्त्ता अपने यहांकी सरकारकी मद्यनिषेध सम्बन्धी अैसी दलीलोंसे तथा अुसकी अुदासीनतासे काफी क्षुब्ध हैं।

गोपालकृष्ण मल्लिक

हिन्दी 'सेवक' परीक्षा

आगामी हिन्दी 'सेवक' परीक्षाकी तारीख २७, २८, २९ जुलाअी निश्चित की गअी थी। लेकिन कअी कारणोंसे परीक्षार्थियोंको अिस वक्त तैयारीका कम समय मिला है। अिसलिअे यह परीक्षा ता० ३१ अगस्त और १, २ सितंबर १९५१ को होगी और अुसकी अर्जियां ता० १५-६-'५१ तक कार्यालयमें पहुंच जानी चाहियें।

गिरिराज किशोर
परीक्षा मंत्री

* 'राष्ट्रवाणी' पटना, १८ मार्च, १९५१

www.vinoba.in

गांधी स्मारक निधि

(ट्रस्ट मंडलकी वार्षिक बैठककी रिपोर्ट)

गांधी स्मारक निधिके ट्रस्ट मंडलकी वार्षिक बैठक ३१ मार्च १९५१ को नअी दिल्लीमें हुअी थी। अुसमें फंड अिकट्ठा करने और बांटनेके कामके बारेमें विचार किया गया और निधिके भावी कार्यकी रूपरेखा निश्चित की गअी थी। ट्रस्ट मंडलके अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर अनिवार्य कारणोंसे बैठकमें अुपस्थित न हो सके, अिसलिअे अुपाध्यक्षने अध्यक्षका स्थान लिया था। नीचेके ट्रस्टी अिस बैठकमें अुपस्थित थे :

श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री राजगोपालाचार्य, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ० पट्टाभि सीतारामैया, राजकुमारी अमृतकुंवर, श्री जगजीवनराम, श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री श्रीराम, श्री आशादेवी आर्यनायकम्, श्री यशोधरा दासप्पा, श्री अे० पी० बेन्थोल, श्री शंकरराव देव, श्री श्रीकृष्णदास जाजू।

बैठकका कामकाज शुरू होनेसे पहले सब सदस्योंने खड़े होकर ट्रस्टकी कार्यकारिणी समितिके अेक अग्रगण्य सदस्य श्री ठक्कर बापाको मौन अंजलि अर्पण की थी।

ता० ३१-१२-'५० को पूरे होनेवाले समय तककी सभा द्वारा मंजूर की हुअी वार्षिक रिपोर्टकी खास खास बातें ये हैं :

गांधी निधिकी कुल रकम रु० ११,३४,६८,५६७–१४–९ है। अिसमें से रु० ४७,८३,३९१–९–३ की रकम अलग-अलग कामोंके लिअे दी गअी है। अिसमें केन्द्रीय निधिसे दी गअी रु० ६,३१,४५९–०–० की ग्रांट, रु० ६,०२,६३१–०–० के प्रान्तीय कोटा और रु० २६,१४,४०४–०–० की अंकित मददका समावेश होता है।

केन्द्रीय निधिसे दी गअी ग्रान्ट अिस प्रकार है:

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा	१,६०,०००–०–०
अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, वर्धा	७०,०००–०–०
हरिजन सेवक संघ, दिल्ली	१,०६,१६९–०–०
भारतीय आदिम जाति संघ, दिल्ली	५६,२५०–०–०
शान्तिनिकेतन और वर्धामें हुअी विश्व-शांति परिषद	१,५०,०००–०–०

प्रान्तीय कोटामें से दी गअी मददमें आदिवासियोंमें काम करनेवाली संस्थाओंको तथा बुनियादी शिक्षा, कुदरती अुपचार, ग्रामोद्योग, गोसेवा, हरिजन-कार्य तथा ग्रामोद्धारके दूसरे रचनात्मक काम करनेवाली प्रान्तीय संस्थाओंको दी गअी मददका समावेश होता है।

अंकित फंडकी जो रकम दी गअी, अुसमें से गांधीजीके साबरमती आश्रमकी देखरेखके लिअे बनाये गये ट्रस्टका जन्म हुआ है। अुस रकममें पूनाके नजदीक गांधीजी द्वारा स्थापित अुरुळीकांचन निसर्गोपचार केन्द्रको दिये गये रु० ३८,२४९–०–० का भी समावेश होता है।

निधिके भावी कामके लिअे भारतको पच्चीस प्रान्तीय अिकाअियोंमें बांट दिया गया है। अिनमें से बीस प्रान्तीय अिकाअियोंमें संचालक और सलाहकार-समितियां काम करने लग गअी हैं।

निधिके कामोंमें स्वभावतः गांधीजी द्वारा स्थापित अूपर बताअी हुअी रचनात्मक कार्य करनेवाली संस्थाओंके कामोंका समावेश होता है। अिस वक्त निधिने नीचेके दूसरे काम हाथमें लिये हैं :

हमेशाके लिअे सुरक्षित रखनेके लिअे गांधीजीके पत्रोंको माअिक्रो फिल्मका रूप देनेका काम चल रहा है। अेक दिल्लीमें अेक साबरमतीमें, अेक वर्धामें और अेक दक्षिण भारतके किसी

योग्य स्थानमें स्मारक-संग्रहस्थान बनानेके संबंधमें विचार चल रहा है। राजघाटकी समाधिके पास बननेवाले दिल्लीके संग्रहस्थानकी योजना तैयार हो रही है। अुसके लिअे सरकारने समाधि-स्थानके पास योग्य स्थान देनेका वचन दिया है।

भारतके अुन महत्त्वपूर्ण स्थानोंकी जांच की गअी है जिनके साथ गांधीजीका निकट संबंध रहा था। और अैसे स्थानोंकी रक्षा तथा अुचित संभालके लिअे और अुनमें से कुछ स्थानों पर स्मारक-स्तंभ खड़े करने व तख्तियां रखनेके लिअे सारी जरूरी व्यवस्था करनेके संबन्धमें विचार हो रहा है। सेवाग्राम आश्रम और खास करके गांधीजीकी झोंपड़ी तथा श्री कस्तूरबा व महादेव देसाअीके निवास-स्थानोंकी देखरेख करके आश्रमवासी अुन्हें अुनकी मूल हालतमें सुरक्षित रख रहे हैं। झुंडके झुंड लोग हर रोज अिन स्थानोंको देखने जाते हैं। देशके दूसरे भागोंमें जहां-जहां गांधीजीके निकट सम्पर्कमें आये हुअे मकान सुरक्षित रखनेके लिअे निधिको मिलें, वहां-वहां अुन मकानोंको खाली रहने देनेके बजाय अुनका अुचित अुपयोग करनेका सोचा गया है।

गांधीजीके जीवनकी भारत और विदेशोंमें बताने लायक फिल्म पहलेकी अुपलब्ध फिल्म परसे तैयार करनेका काम अिस सम्बन्धकी जानकार समितिको सौंप दिया गया है। दिवंगत सरदार वल्लभभाअी पटेलने निधिके अुपाध्यक्षके नाते यह समिति नियुक्त की थी।

हाथमें लेनेके लिअे विचारे हुअे रचनात्मक कामोंमें गांधी-घरों, यानी रचनात्मक प्रवृत्तिवाले ग्राम-केन्द्रों और कुष्ठ-निवारणका काम है। गांधी-घरोंकी मूल योजना पंडित जवाहरलाल नेहरूने सुझाअी थी और निधिकी प्रान्तीय समितियां अुस पर सक्रिय विचार कर रही हैं। ज्यादातर समितियोंने अुसकी रूपरेखा तैयार कर ली है और कुछ समितियोंने तो अैसे ग्रामकेन्द्रोंके लिअे सेवक तैयार करनेकी योजना भी हाथमें ले ली है।

कुष्ठ-निवारणके कामको गांधी-निधि गांधीजीका अेक विशेष प्रकारका स्मारक मानती है। अुन्होंने अिस कामके लिअे काफी समय दिया था और अपने जीवनके अन्तिम वर्षोंमें स्वयं कुष्ठ-रोगियोंकी सार-संभाल की थी। पन्द्रह विशेषज्ञोंकी बनी हुअी समिति आज अिस क्षेत्रमें अलग-अलग संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कामका आपसमें मेल साधकर तथा देशके कुष्ठ-निवारणके कामको वैज्ञानिक ढंग पर ज्यादा फैलानेकी योजना तैयार करके अिस विचारको मूर्त स्वरूप दे रही है।

निधिका खर्च फैलानेकी दस वर्षकी अवधि तय करनेके कार्य-कारिणी समितिके प्रस्तावको ट्रस्टियोंने मंजूर रखा था। प्रान्तोंका अुपलब्ध कोटा निधिसे सम्बन्धित विभिन्न प्रवृत्तियोंके बीच अुचित अनुपातमें बांटनेके विस्तृत प्रस्तावको भी ट्रस्टियोंने स्वीकार कर लिया था। बजट-समितिने दोनों प्रस्तावोंकी सर्वानुमतिसे सिफारिश की थी। अिस समितिकी बैठकमें गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमके प्रतिदिनके कार्योंसे सम्बन्ध रखनेवाले व्यक्ति हाजिर थे।

प्रान्तीय कोटा बांटनेसे सम्बन्ध रखनेवाली साधारण नीतिके दूसरे मुद्दे ये हैं:

फंडकी ८५ प्रतिशत रकम गांवोंमें खर्च की जानी चाहिये। अैसी अपेक्षा है कि फंडकी लगभग २५ प्रतिशत रकम प्रान्त गांधी-घरोंकी योजनाके अमलके लिअे सेवक तैयार करनेमें और अुनके निर्वाहमें खर्च करेंगे। शनिवार और रविवारको कार्य-कारिणी समितिकी बैठक हुअी थी। अुसमें ३७ लाख रुपये कलकत्ताके जूट मिल अेसोसियेशनको देनेका निर्णय किया गया था। यह अुस अेसोसियेशन द्वारा मिले हुअे फंडकी ७५ प्रतिशत रकम है जो कलकत्ताकी पटसनकी मिलोंमें काम करनेवाले मजदूरोंके लिअे अस्पताल बनानेके लिअे अंकित की गअी थी।

समितिने १९५१ के लिअे प्रान्तोंका कुल लगभग १५ लाख रुपयेका और केन्द्रका लगभग ६ लाख रुपयेका बजट मंजूर किया था।

६, मानसिंह रोड,
नअी दिल्ली, २
(अंग्रेजीसे)

लक्ष्मीदास पुरुषोत्तमदास
मंत्री, गांधी स्मारक निधि

अिलाहाबादकी हरिजन-बस्तियां

१५ फरवरी १९५१ को १ से ४ बजे तक मैंने अिलाहाबादकी हरिजन-बस्तियोंको देखा।

१. भैंसा गोदाम: यह बस्ती अिलाहाबाद रेलवे जंकशनके पास ही है। अिस बस्तीमें ३२ मेहतर परिवार रहते हैं। अुनकी छोटी-छोटी कोठरियां हैं। सार्वजनिक पाखानेमें कुल ५२ कदमचे हैं। यहां पर बड़ी संख्यामें लोग शौचके लिअे आते हैं। कुछ कोठरियां तो बमपुलिससे १०-१२ फुटकी दूरी पर ही हैं। पाखाना लगभग हर समय गंदा रहता है और बदबू फैलाता है। मैदानमें गंदी गाड़ियां खड़ी रहती हैं। अुनको वहांसे हटाकर अुसके पास ही खाली म्युनिसिपल जमीन पर (पाखानेकी बगलमें) खड़ा किया जा सकता है। बीचमें भैंसोंके चारेके लिअे दो बड़े, (कुंअें जैसे) हौज हैं। वे बेकार पड़े हैं। अुनको तो बन्द ही कर देना चाहिये। अुनके आसपास खुली जगहमें अच्छे, रहने योग्य क्वार्टर बना देने चाहियें। वर्षाका पानी निकलनेका रास्ता भी ठीक नहीं। नालियां ढालू बनानेकी जरूरत है। तीन नल हैं। रोशनीके लिअे अेक बत्ती नाकाफी है। कमसे कम दो बत्तियां और लगा देनी चाहियें। सामान्य स्कूलोंमें बच्चे पढ़ने जाते हैं। बस्तीमें श्री लच्छूलाल अेक अुत्साही नवयुवक मेहतर हैं, जिन्होंने मेट्रिक तक शिक्षा पाअी है।

२. फतहपुर बिछुआ: यहां तीस मेहतर परिवार छोटी छोटी कोठरियों (९।–८ फूट) में रहते हैं। छोटे परिवारके लिअे भी जगह तंग है। २० कोठरियां बिना अिजाजतके बना ली हैं। चार कदमचोंका पाखाना कम पड़ता है। बच्चे सामान्य स्कूलोंमें बिना रोकटोक जाते हैं। खुली हुअी काफी जगह पड़ी है। यहां पर अच्छे क्वार्टर बनाये जा सकते हैं। यदि मकान बनानेकी अिजाजत दे दी जाय तो ये लोग अपनी लागतसे मकान बनानेको तैयार हैं। बिजलीकी बत्ती केवल अेक है। कुछ बत्तियां जरूर बढ़ा देनी चाहियें।

३. कालीमाओका थान: यहां पर तीस मेहतर परिवार रहते हैं। बच्चे सामान्य स्कूलोंमें बेरोकटोक जाते हैं। केवल अेक नल और रोशनीके लिअे अेक बत्ती है। शेष बस्तीको अंधेरी रातमें बड़ी कठिनाअी पड़ती है। ११ क्वार्टरोंकी अेक लाअिन बादमें बनाअी गअी है, जिसके सामने तंग गली है। कुछ क्वार्टरोंके बिलकुल सामने तीन खानगी पाखाने बने हुअे हैं, जो हमेशा बदबू फैलाते हैं। वर्षामें कच्ची तंग गलीमें कीचड़ हो जाती है। अिस बस्तीके पास ही ४८ कदमचोंका सार्वजनिक पाखाना है। पाखानेके पास काफी रोशनी नहीं है। केवल अेक बत्ती है।

४. फकीरगंज (कटरा): यहां पर केवल ५ म्युनिसिपल क्वार्टर हैं, जिनमें से दो गिर गये हैं। मालूम हुआ कि कअी अर्जियां दीं, पर क्वार्टरकी मरम्मत नहीं हुअी। पानी व रोशनीका प्रबन्ध ठीक है। बच्चे सामान्य स्कूलोंमें जाते हैं।

५. डिप्रेस्ड क्लास लीग छात्रावास: यहां १८ विद्यार्थी अुच्च कक्षाओंमें पढ़ते हैं। १८ रु० मासिक किरायेका मकान है। सब विद्यार्थी सफाअीसे रहते हैं। रसोअीके लिअे अलग छोटे कमरे हैं। यदि मकानका प्रबन्ध हो जाय तो छात्रोंकी संख्या बढ़ाअी जा सकती है। खानेका खर्च २०-२२ रु० मासिक तक आता है। अुत्तर प्रदेश सरकारसे कअी मासकी छात्रवृत्तियां नहीं मिली हैं। जिससे

www.vinoba.in

विद्यार्थियोंको काफी कठिनाअी हो रही है। श्री सुखीराम भारती छात्रालयकी व्यवस्था देखते हैं, जो अुत्साही तथा लगनवाले नवयुवक प्रतीत होते हैं।

म्युनिसिपल कर्मचारी मेहतरोंकी नअी भरती ३१ रु० मासिक पर होती है और पुरानोंको ४० रु० मासिक वेतन मिलता है। १४ दिनकी सालाना छुट्टियां हैं। साप्ताहिक छुट्टी आधे दिनकी होती है। विशेष त्यौहारों पर भी छुट्टी रहती है।

सब बस्तियोंके बच्चे सामान्य स्कूलोंमें बिना भेदभावके पढ़ने जाते हैं। हरिजन-सेवक-संघके कार्यकर्ताओंको सामान्य स्कूलोंमें हरिजन छात्रोंको दाखिल करानेका भरसक प्रयत्न करना चाहिये। नगरपालिकाका कर्तव्य है कि वह अपने निम्नतम कहे जानेवाले आवश्यक कर्मचारियोंकी सुविधाओं पर ध्यान दे। अुनके रहन-सहनके स्तरका कुछ अूंचा हो जाना नगरपालिकाकी सुव्यवस्थाका द्योतक होगा।

वियोगी हरि

टिप्पणियां

अन्न-संग्रह

अेक सज्जनने 'दो-बार-भोजी' के नामसे मुझे यह पत्र लिखा है:

"बिहारमें और दूसरी जगहोंमें भी लाखों आदमी भूखकी पीड़ासे व्याकुल हैं, तब भी हममें करोड़ों अैसे हैं जो हर दिन दो बार परिपूर्ण भोजन करनेका सुख भोग रहे हैं।

"तो क्या हम अिस भयंकर दृश्यको सुरक्षित दूरीसे सिर्फ देखते ही रहेंगे? क्या हम स्वेच्छासे अितना भी नहीं कर सकते कि प्रति सप्ताह दो बारका भोजन छोड़ दें, और यह सारा अन्न अिकट्ठा करके अेकदम दुर्भिक्ष-पीड़ित क्षेत्रोंको पहुंचा दिया करें?

"लेकिन सरकार अिसके लिअे जरूरी रेलगाड़ी आदिकी सुविधा कर देगी या नहीं?

"अखबारों द्वारा देशकी जनताके नाम अेक संयुक्त अपील निकाली जाय। मुझे आशा है कि हमारे साधन-सम्पन्न नागरिकोंको अपने भूखों मर रहे भाअियों और बहनोंकी याद आयेगी और वे अवश्य ही अपने कर्तव्यके प्रति सचेत होंगे।

"हमें अमरीकी दानका भरोसा करनेकी क्या जरूरत है?

"भारत यद्यपि, अभी विपत्तिमें है, लेकिन अुसमें अुठ खड़े होनेकी शक्ति तो है ही।"

यह अपील बहुत अुचित है और सरकारको चाहिये कि वह जरूरी सुविधायें देकर अिस वृत्तिको प्रोत्साहन दे। मैं अिन पत्र-लेखक भाअी तथा जिन दूसरे लोगोंके मनमें यह शुभ विचार आया हो, अुन सबको अपनी-अपनी जगह अिस तरह अन्न अिकट्ठा करने और अिस कामको बढ़ानेकी दिशामें व्यावहारिक कदम अुठानेकी सलाह देता हूं।

वर्धा, २-५-'५१ **कि० घ० म०**

(अंग्रेजीसे)

सर्वोदय समाजका संदेश

अिस छोटीसी जिन्दगीमें हम कसौटी पर हैं। अिस संसारमें जो कुछ थोड़े दिन हमें रहना है अुनमें सबकी सेवा तथा सबका प्रेम हासिल करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

जिन्होंने अिस दुनियामें आकर पैसा कमाया लेकिन प्रेम गंवाया अुन्होंने कुछ भी नहीं कमाया; जिन्होंने ज्ञान हासिल किया मगर सबका प्रेम हासिल नहीं किया, अुन्होंने कुछ भी हासिल नहीं किया; जिन्होंने शक्ति संपादन की पर सबका प्रेम संपादन नहीं किया, अुन्होंने कुछ भी संपादन नहीं किया।

अिसलिअे, भाअियो, सबसे प्रेम करो और सबका प्रेम हासिल करो। यही सर्वोदय समाजका संदेश है।

(मराठी 'सेवक'से) **विनोबा**

ऑल अिण्डिया रेडियोकी भाषा-नीति

सिनेमा और रेडियो हिन्दी प्रचारके बड़े सबल साधन हैं। सिनेमाने अपने हितके विचारसे हिन्दीको सादा और सरल बनाया है, ताकि ज्यादातर लोग अुसे समझ सकें। लेकिन रेडियोके बारेमें अैसा नहीं कहा जा सकता। अुसकी भाषा सम्बन्धी नीतिके द्वारा किसी खास विचारधाराका या विशेष संस्कृतिका अुद्देश्य सिद्ध करनेमें रेडियोका अुपयोग किया जा सकता है। भारतके विधानमें देशकी भाषा सम्बन्धी नीति निश्चित कर दी गअी है, और अब रेडियोको अुसका पालन करना होगा। अिसलिअे ब्रॉडकास्टिंग विभागके मंत्री श्री दिवाकर द्वारा केन्द्रीय धारासभामें की गअी नीचेकी घोषणा (ता० ११-४-'५० के 'हिन्दू' अखबारसे वह यहां ली गअी है) बड़ी स्वागत योग्य है:

"हिन्दीके बारेमें भाषा सम्बन्धी नीतिका अुल्लेख करते हुअे श्री दिवाकरने कहा कि अिसके लिअे नियुक्त की हुअी सलाहकार समिति अिस बारेमें जांच कर रही है। अपनी पहली बैठकमें अुसने अेकमतसे यह निर्णय किया है कि ऑल अिण्डिया रेडियोकी भाषाकी यही कसौटी होनी चाहिये कि अुसे ज्यादासे ज्यादा लोग समझ सकें। ऑल अिण्डिया रेडियो किसी खास संस्कृति या विचारधाराका विकास करनेका साधन नहीं है। और विधानकी सामान्य स्वतंत्रता सम्बन्धी ३५१ की धाराके मुताबिक 'हम अैसी भाषाका विकास करनेका सोच रहे हैं, जिसे सिर्फ हिन्दी भाषा बोलनेवाले ही नहीं, बल्कि दूसरी भाषायें बोलनेवाले लोग भी आसानीसे समझ सकें।'"

(अंग्रेजीसे) **म० देसाअी**

गो-सेवकोंकी शिक्षा

सर्व सेवा संघके कृषि-गोसेवा-विभागकी ओरसे ता० ७ जुलाअी, १९५१ से गो-सेवकोंकी शिक्षा वर्धासे ३ मील पर स्थित पिपरी केन्द्रमें शुरू होगी। गो-सेवाकी दृष्टि, गोपालन और पशुचिकित्सा — अिनका सामान्य ज्ञान दस महीनेमें दिया जायगा। खेती खासकर चारेकी, गोरस भांडार, गो-नसल सुधार, जमाखर्च और चर्मालयकी साधारण जानकारी — अिन विषयोंका विशेष शिक्षण लेनेके लिअे अधिक समय देना होगा। विद्यार्थीको हिन्दी अच्छी तरहसे लिखना-पढ़ना आना चाहिये। अंग्रेजीका ज्ञान मेट्रिकके लगभग हो। जो खादीधारी होंगे और अिसी कार्यमें आगे काम करनेकी जिनकी योजना और अिच्छा होगी, अैसे ही विद्यार्थियोंको शिक्षणके लिअे लिया जा सकेगा। अभी केवल बीस विद्यार्थियोंके शिक्षणकी व्यवस्था की जा सकेगी। योग्य विद्यार्थियोंको रुपये २५ तक मासिक छात्रवृत्ति दी जा सकेगी। १५ जून तक आवेदनपत्र आ जाने चाहियें।

राधाकृष्ण बजाज
मंत्री,
कृषि-गोसेवा-विभाग, गोपुरी, वर्धा

३०-४-'५१

विषय-सूची

		पृष्ठ
श्री शिवानन्दजीकी हत्या	कि० घ० मशरूवाला	८१
बिना टिकटका प्रवास	कि० घ० मशरूवाला	८१
शक्तिमान शब्द	विनोबा	८२
श्री सोमनाथ मंदिर — स्पष्टीकरण	अु० न० ढेबर	८३
अन्नकी कमी	कि० घ० मशरूवाला	८४
गैरमजहबी राज्यमें मंदिरका स्थान	कि० घ० मशरूवाला	८४
मद्यनिषेध हर हालतमें आवश्यक	गोपालकृष्ण मल्लिक	८५
गांधी स्मारक निधि	लक्ष्मीदास पुरुषोत्तमदास	८६
अिलाहाबादकी हरिजन-बस्तियां	वियोगी हरि	८७
टिप्पणियां:		
हिन्दी 'सेवक' परीक्षा	गिरिराज किशोर	८६
अन्न-संग्रह	कि० घ० म०	८८
सर्वोदय समाजका सन्देश	विनोबा	८८
ऑल अिण्डिया रेडियोकी भाषा-नीति	म० देसाअी	८८
गो-सेवकोंकी शिक्षा	राधाकृष्ण बजाज	८८

www.vinoba.in